P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-10* (Part-1) January 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भारतीय समाज में विधवाओं की समस्याएं एक समाज भाास्त्रीय अध्ययन

अंजली मलिक
शोधार्थी, पी0डी0एफ0
समाजशास्त्र विभाग,
एस0 डी0 कालेज,
गजियाबाद

कमले□ा भारद्वाज
रीडर,
समाजशास्त्र विभाग,
एस0 डी0 कालेज,
गजियाबाद

सारांश

भारत की संस्कृति और सभ्यता हमेशा से ही अन्य देशों से आने वाले व्यक्तियों के लिए कौतूहल और रोचकता का विषय रही है। इस देश मे सदैव से ही 'वासुदेव कुटुम्बकम् की धारणा प्रचलित रही है, यहॉ आने वाले अन्य देशों के नागरिक भी यहाँ की गौरवशाली संस्कृति से प्रभावित हो यही पर बस गये थे। जो अपने अलग–अलग धर्मो और संस्कृतियों के साथ यहीं पर रहकर भारतीय परिवेश और समाज का अंग बनते चले गयें। हर समाज में स्त्रियों एवं पुरूषों के जीवन यापन करने के लिए भिन्न–भिन्न नियमों को बनाया गया है। इन्हीं मान्यताओं के अनुसार सभी व्यक्ति अपना जीवन यापन करते है। समाज के अर्न्तगत ही समाज में रहने वाले व्यक्तियों की समस्याऐं उत्पन्न होती हैं। इन्हीं सामाजिक समस्याओं में से एक समस्या है 'वैध्वय' की समस्या, जो स्त्री व पुरूष दोनों की जीवन में घटित होती है। परन्तु विडम्बना है कि समाज का रवैया स्त्रियों के प्रति अधिक कठोर है जबकि पुरूष विधुर के प्रति उतना कठोर नही हैं। समाज की मान्यताओं के अन्तर्गत कुछ ऐसे भी नियम बनाये गये है जिसके कारण पति के देहांत के पश्चात् एक 'विधवा' का जीवन अत्यन्त संघर्षमय हो जाता है। उन्हें समाज का अवशिष्ट अंग मानकार उनको बहिष्कार पूर्ण रवैया लोगों के द्वारा झेलना पड़ता है और अधिकांशतः बहिष्कृत एवं संघर्ष पूर्ण जीवन जीने के लिए एक विधवा को विवश होना पडता हैं।

मुख्य शब्द : संस्कृति, सभ्यता, वासुदेव कुटुम्बकम, विधुर, विधवा।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति उतनी ही पुरातन है जितनी कि मावन इतिहास की उत्पत्ति। हमारे भारतीय समाज में सदैव ही स्त्रियों को पूज्यनीय माना गया है। प्राचीन समय में स्त्रियों को समाज में जो सम्मान जनक स्थान प्राप्त था, कालांतर में उसमें समय के साथ–साथ नवीन मान्यताओं के जुड़ जाने के कारण उसमें न्यूनता आती चली गयी, और एक समय के बाद मान्यताओं का स्वरूप परिवर्तित होकर उसने रूदिवादिता को जन्म दिया। इस रूढ़िवादी विचार धारा ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपना व्यापक प्रभाव डाला जिसके कारण मूल मान्यताओं का स्वरूप दूषित हुआ और मान्यताऐ कब कुरीतियों एव अन्धविश्वास में परिवर्तित होती चली गयी पता ही नही चला।

हमारे समाज में विभिन्न कुरीतियों के उद्गय के कारण समाज की विचारधारा परिवर्तित एवं दूषित होती चली गयी। जिसका समाज में रहने वाले स्त्रियों एवं पुरूषों के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव देखने को मिलने लगा। स्त्रियों के सन्दर्भ में यदि बात की जाये तो उनके सम्मान व गरिमा का स्तर भी कालानुसार निम्न होता चला गया।

वैदिक काल में जहॉ स्त्रियों को सम्मान जनक स्थान प्राप्त था वहीं मध्यकाल तक आते–आते वह विभिन्न प्रतिबन्धों में जकड़ चुका था। सामाजिक कुरीतियों व अन्धविश्वास के कारण बाल विवाह, बेमेल–विवाह, सती–प्रथा और विधवा विवाह के निषेध जैसी मान्यताओं ने उनका जीवन स्तर नर्क तुल्य दूषित बना दिया। समाज और परिवार में उनके बहिष्कार और शोषण जैसी घटनाए जन्म लेने लगी।

समाज में विधवा स्त्रियों को अशुभ एवं अपवित्र माना जाने लगा और उनके लिए सभी प्रकार के मांगलिक कार्यो, उत्सवों एवं विलासिता पूर्ण जीवन प्रतिबन्धित कर दिया गया, जिसके साथ उनके अधिकार क्षेत्रों को समिति कर उनके बहिष्कार और शोषण जैसी प्रवृतियॉ समाज में व्याप्त हो गयी। उन्हें कठोर नियमों व ऐश्वय त्याग कर ब्रहमचर्य पूर्ण जीवन जीने के लिए विवश किया जाने लगा। जबरन उन पर प्रतिबन्धों को मान्यताओं का रूप देकर उनका जीवन

दुखद होता चला गया। समय –समय पर विभिन्न आन्दोलन भी नारियों की दशा में सुधार हेतु किये गये जिसके परिणामस्वरूप स्थितियों में सुधार भी किया गया व नियम–कानून भी बनाये गये ताकि स्त्रियों के हितो की रक्षा व संरक्षण हो सकें।

परन्तु आज भी विधवा स्त्रियों का जीवन बहुत ज्यादा परिवर्तित नही हो पाया है, हमारे समाज में विधवाएं आज भी बहिष्कृत एवं तिरस्कृत जीवन जीने को विवश है। जिस कारण उनके जीवन में विभिन्न कष्टों एवं शोषण का सामना करके जीवन बसर करना उनकी नियति बन गया है। हमारे समाज में भिन्न–भिन्न विधवाओं की भिन्न–भिन्न समस्याऐं होती है जो उनके जीवन के सामाजिक जीवन, व्यक्तिगत समस्याओं, बहिष्कार के कारण उत्पन्न परिस्थितियों से जुडो हुई होती हैं। ये समस्याऐं यक्ष पश्न की भॉति उनके जीवन में विद्यमान रहती है जो प्रत्येक विधवा के जीवन क्षेत्र को प्रभावित करती है ये निम्न लिखित है–

आर्थिक रूप से आत्म निर्भर न होने की समस्या

विधवाओं की मूल समस्याओं में से एक प्रमुख समस्या है उनका आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर न होना। जिसके कारण उन्हें दूसरो के दबाव में जीवन यापन करना पड़ता है, जिस कारण वे स्वतन्त्र रूप से अपने जीवन में न तो निर्णय लेने में समर्थ होती है और न ही अपने साथ होने वाले अनुचित प्रकार के व्यवहार का प्रतिरोध करने में समर्थ होती है। आर्थिक रूप से असमर्थता के कारण उनके समक्ष अनेकों प्रकार की समस्याएं रहती है, जिनका सामना उन्हें अपने जीवन काल में समय–समय पर सामना करते रहना पडता है।

मनौवैज्ञानिक/भावनात्मक समस्याएं

अपने जीवन में विभिन्न प्रकार के संकटों से घिरी रहने वाली विधवा महिलाआ को अधिकांशतः मानसिक अवसाद से ग्रस्त पाया गया है, उनके अन्दर कुंठा भी देखने को मिलती है। विपरीत परिस्थितियों में जीवन यापन करने के कारण उनमें अधिकांशतः आत्मविश्वास की कमो, जीवन के प्रति विमोह, डर, असुरक्षा, गहन आत्मघाती प्रवृत्ति आत्महत्या की भावना, सदमा आदि की समस्याए उनके जीवन में पायी जाती है। उन्हें लगता है कि वो इस स्थिति दुख से पूरी तरह से नही उभर पायेंगी, और वह अपनी स्थिति के लिये उस को जिम्मेदार मानती है।

निश्किंयता के कारण उत्पीडन को समस्या

समाज में विधवाओं के उत्पीडन का एक प्रमुख कारण उनका उनके कार्यक्षेत्रों में निष्क्रिय होना भी है, जिसका कारण उनके व्यक्तिगत जीवन में घटी वैध्वय की घटना होती है जो उनकी क्षमताओं को क्षीण कर देती है। जिसके फलस्वरूप उनके आस–पास व परिवार के लोग उनका शोषण करने लगते हैं। जहॉ कई बार उन्हें हिंसात्मक स्थितियों का भी सामना करना पडता है। इस सबके कारण उनका जीवन और अधिक संघर्षमय हो जाता है।

सामाजिक जीवन में समायोजन का अभाव

किसी भी समाज में जितनी अच्छी समायोजन उसमें रहने वालो में होगी वह समाज उतना ही सशक्त होता है। विधवाओं के समाज के साथ समायोजन में कई कारण बाधक होते है जो उनके जीवन पर प्रत्यक्ष रूप से बहुत व्यापक प्रभाव डालते है। समाज में रहने वाले लोगों ने विधवाओं के लिये जो नियम बनाये हैं, कही न कहीं उनका स्वरूप बेहद कठोर हो जाता है। जिस कारण विधवा स्त्रियों को उन नियमों के पालन में बहुत ज्यादा आघात पूर्ण स्थितियों का सामना करना पडता है भले ही वह इन नियमों को ना भी अपनाना चाहे तब भी उनको अपने जीवनकाल में निर्वाह करना उनकी मजबूरी बन जाता है। इसी कारण एक नकारात्मकता पूर्ण वातावरण की उत्पत्ति होती है जिसके साथ उनको समायोजन में समस्या होती हैं।

भाारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोरी

एक महिला के जीवन में जब उनके पति की मृत्यु हो जाती है तो यह महिला के लिए बहुत बड़ा मानसिक आघात पहुॅचाने वाली घटना होती है। इस घटना के कारण धीरे–धीरे विधवा के जीवन में निराशा का संचार होता है, जिसके फलस्वरूप उसके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और वह मानसिक व शारोरिक स्तर पर कमजोर होती चली जाती है। जिसके कारण प्रतिकूल परिस्थितियो से संघर्ष करने की उसकी सामर्थ्य समाप्त होने लगती है। कई बार वह कुपोषण की भी शिकार हो जाती है एवं उसके जीवन में व्याप्त तनाव व अवसाद उसे मानसिक रूप से भी अक्षम बना देता है।

अ□ाक्षा के कारण दयनीय स्थिति

समाज में उन विधवाओं की स्थिति बहुत ज्यादा खराब पायी गयी है जहां अशिक्षित लोग रहते है। जिन क्षेत्रों में शिक्षा का प्रसार नही है वहां लोग अन्धविश्वास एवं कुरीतियों को सर्वाधिक महत्व देते है। वहां उन्हे अध्ययन, अशुभ मानने के उदाहरण भी कई बार मिलते है। विडम्बना है कि वहां अधिकांश विधवाऐं भी अशिक्षित ही है, जिन्हें अपने अधिकारों एवं सुरक्षा सम्बन्धी कानूनों की भी जानकारी नही है। वही शिक्षित समाज व शिक्षित विधवा की स्थिति इतनी खराब नही पायी गयी है। उनकी जीवन शैली भी अशिक्षित गरीब विधवाओं से अच्छी पायी गयी है। समस्याऐं उनके भी जीवन में है किन्तु यह उनसे संघर्ष करने में समर्थ होती है गरीब में अशिक्षित निम्न विधवा की तुलना में।

एकांकीपन

पति की मृत्यु के पश्चात् ससुराल पक्ष महिला की जिम्मेदारी नही लेना चाहता है। उसके मायके के परिजन और माता–पिता अधिकाशतः यही सोचकर अपने दायित्व से मुंह मोड लेते है कि हमारी जिम्मेदारी तो केवल शादी–ब्याह करने तक की ही थी अब आगे इसकी किस्मत। विधवा के लिए दूसरो शादी की संभावना भी कम ही होती है क्योंकि अधिकांश महिलाऐं दोबारा विवाह नही करना चाहती है। दूसरी और युवा व निसन्तान विधवाओं के लिए स्थितियां फिर भी कुछ हद तक पुर्नविवाह के लिए बन जाती है, परन्तु जो विधवाऐं उम्र दराज है या जिनके बच्चे है उनके लिए तो यह भी स्थिति नही रहती है। किसी आश्रम अथवा संयुक्त परिवार में वह अपनी

समस्याएं दुख किसके समक्ष प्रकट करे ये अपने आप में एक बड़ा प्रश्न है क्योंकि न तो समाज को उसकी जरूरत है और न ही परिवार को। ऐसी स्थिति में विधवा का जीवन अत्यंत एकाकी बन जाता है वह समाज की भीड़ में स्वयं को उसकी समस्याओं के साथ एकाकी पाती है।

सामाजिक बहिश्कार

हमारे समाज की रूढ़िवादी प्रथायें एवं लोगों को विधवा स्त्रियों के विषय में खराब विचारधारा, इन्हें समय समय पर अकेला व बहिष्कृत महसूस कराती है। आज 21 वीं सदी के भारत में रहने के बाद भी हमारे समाज में यदि सुबह–सुबह किसी विधवा महिला का चेहरा देख लिया जाये तो इसे अपशकुण की श्रेणी में रखा जाता है ओर इसके लिए उक्त महिला को लोगों के द्वारा कोसा भी जाता है। किसी भी शुभ समारोह, विवाह संस्कार आदि में विधवा महिलाओं का आज भी पीछे ही रखा जाता है। उन्हे शुभ संस्कारों में प्राथमिकता नही दी जाती है। उन्हें सभी शुभ संस्कारों की सामग्री तक नहो छूनें दी जाती हैं। उन्हें अपशकुनी माना जाता है,

व्यक्तिगत जीवन में प्रतिबन्ध व अपमान जनक परिस्थितियॉ

अधिकांश विधवाओं ने यह स्वोकारा है कि वे अपनी इच्छाओं का त्याग कर परिवार व समाज द्वारा बनाये गये नियमों के अनुसार अपना जीवन जीने के लिए विवश है। जहॉ न तो उन्हें साज–श्रंगार का अधिकार होता है और न ही गहरे, चटकीले रंगीन वस्त्रो को धारण करने की अनुमति। उनसे पति की मृत्यु के पश्चात् खुश रहने, सुंदर दिखने, अच्छे कपड़े पहने का अधिकार भी छोना जाता है। समाज में विधवा महिलाओं द्वारा सादे वस्त्र पहनने, बिंदी, मेहंदी, जेवर आदि प्रयोग न करने का रिवाज आज भी प्रचलित है। पहले विधवा महिला का मुण्डन करा दिया जाता था, परन्तु अब यह प्रचलन बहुत कम है। उनसे अच्छा मसालेदार भोजन करने पर प्रतिबन्ध भी बहुत सारे स्थानों पर प्रचलित हैं।

भिक्षावृत्ति की समस्या

निर्धन विधवाओं के पास जहॉ कोई आय व भरण–पोषण का स्थायी स्त्रोत नही होता है, उन परिस्थितियों में ये महिलाऐ अपने भरण–पोषण के लिए भिक्षावृत्ति का सहारा लेती हैं भिक्षावृत्ति के इस कार्य में जहॉ वृद्ध एवं अशक्त महिलाऐ संलिप्त है वही एक बडी संख्या इनमें मध्यम आयु वर्ग व युवा वर्ग की विधवाओं की भी होती हैं। ये महिलाऐं इसे एक आसान साधन मानकर अपने जीवन के उपार्जन हेतु प्रयोग करती है। ये सडको पर, रेलवे स्टेशनों व मंदिरो आदि के बाहर बैठकर भीख मांगती हुई देखी जा सकती है।

अनैतिक यौन संम्बधों व वे□यावृत्ति की समस्या

कई बार ऐसा भी देखा गया है विधवा स्त्री को घर से निकाल दिया जाता है और वह कई बार धोखें से, मजबूरी वश अथवा स्वेच्छा से इस व्यवसाय में संलिप्त हो जाती है। कारण है उसका उसके परिजनों के द्वारा बहिष्कार जिससे उसके समक्ष अपने जीवन यापन व आकांक्षाओं, आवास की समस्या उत्पन्न होने की दशा में वह यह घृणित व्यवसाय अपनाने के लिए बाध्य हो जातो है। कभी–कभी विधवायें अपनी योनाकांक्षाआ की पूर्ति व परिवार में अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखने के लिए भी अनैतिक सम्बन्धों का सहारा लेती हैं।

संतानों के उत्तरदायित्व, पालन–पोशण व निर्णय लेने की असमर्थता

विधवाओं के समक्ष यह भी एक बड़ी समस्या होती है जब वह आर्थिक रूप से सबल नही होती है, आर उन्हें अपनें बच्चों के पालन–पोषण का दायित्व भी वहन करना होता हैं। यह परिस्थिति बहुत जटिल समस्या के रूप में उनके समक्ष खड़ी होती है जिस कारण कई बार वे अपनी संतान से सम्बन्धित बड़ें निर्णय लेने की स्थिति में स्वयं को असहज महसूस करती हैं।

वैध्वय' एक सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन से जुडी दुर्घटना है जो स्त्री एवं पुरूष दोनों के जीवन में समान रूप से घटती हैं। परन्तु समाज में रहने वाले लोगों से इस घटना के लिये अधिकांशतः महिलाओं के परिपेक्ष्य में यदि बात करें तो उस महिला को अशुभ मानते है जिसके पति की मृत्यु हो जायें, जबकि यदि किसी स्त्री के पुत्र अथवा पुत्री या माता–पिता की मृत्यु हो जाये तो सम्बन्धित महिला को उतनी अशुभ दृष्टि से नही देखते है जितना कि पति की मृत्यु के पश्चात् उस महिला को देखा जाता है।

निश्कर्श

यहॉ विधवा होने के कारण उसका सभी शुभ सामाजिक व धार्मिक संस्कारों, अच्छे रहन–सहन, आभूषण व रंगीन वस्त्रों के ओढ़नें पहनने पर प्रतिबंध लगा दिया जाता हैं। यहॉ तक की वह ज्यादा अच्छा भोजन करने की अधिकारी भी नही रहती है। समाज की विधवाओं के प्रति इस प्रकार की क्रूर विचारण वास्तव में निंदनीय हैं, परन्तु फिर भी यह सब पीढ़ी–दर पीढ़ी हमारे समाज में चली आ रही हैं इस प्रकार की मान्यताओं के कारण विधवाओं का जीवन अत्यंत दयनी एवं दुरूह हो जाता हैं। ये मान्यताए उनके व्यक्तित्व एवं जीवन दोनो को धीरे–धीरे नकारात्मकता की ओर धकेलती है जिसके फलस्वरूप उनमें अवसाद, जीवन के प्रति नकारात्मकता और शोषण जैसी समस्याऐं उनके जीवन का अंग बन जाती हैं। समाज के इस रवैये में समय के साथ परिवर्तन होना आवश्यक है तभी विधवाओं के कष्टों का निवारण होता है और उनके जीवन स्तर में सकारात्मक परिवर्तन आयेगें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सिंह मनोज कुमार, 2000,''भारत में सामाजिक परिवर्तन'', आदित्य पबिलर्शस, बीना, मध्य प्रदेश ।*
2. *खरे एस0 एल0– भारतीय इतिहास में नारी।*
3. *मित्तल सत्य प्रकाश, मौर्य, रामलखन, 2005,'' काशी में मोक्षकामी प्रवासी विधवाएॅ धार्मिक –सामाजिक जीवन'', विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।*
4. *डॉ0 प्रभा आप्टे–'' भारतीय समाज में नारी'' 1996, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर,*
5. *कटारिया कमलेश, 2003,– नारी जीवनः वैदिक काल से आज तक, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर,*